इकाई १३ भूटान: अर्थव्यवस्था, समाज और राजनीति

इकाई की रूपरेखा

१३.० उद्देश्य

१३.१ प्रस्तावना

१३.२ भौगोलिक विवरण

१३.३ समाज

१३.३.१ भाषा

१३.३.२ धर्म

१३.४ राजनीतिक इतिहास

१३.५ राजनीतिक प्रक्रियाएँ

१३.५.१ शासन-तंत्रा

१३.५.२ राष्ट्र-निर्माण

१३.५.३ विदेश-संबंध

१३.६ अर्थव्यवस्था

१३.६.१ नियोजित आर्थिक विकास प्रयास

१३.६.२ सामाजिक क्षेत्रा

१३.७ सारांश

१३.८ कुछ उपयोगी पुस्तकें

१३.९ बोध प्रश्नों के उत्तर

१३.० उद्देश्य

इस इकाई में हम पढ़ेंगे भूटान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसकी सामाजिक संरचना, उसकी राजनीतिक प्रक्रिया के क्रम-विकास तथा उसके आर्थिक विकास के संबंध में। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होंगे कि :

- भूटान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को उकेर सकें;
- भूटानी समाज के अभिलक्षणों का विश्लेषण कर सकें;
- राजनीतिक प्रक्रियाओं के क्रमिक विकास का खाका खींच सकें;
- आर्थिक विकास में शामिल कारकों की पहचान कर सकें; और
- सामाजिक क्षेत्रा में मुख्य उपलब्धियों से तादात्म्य स्थापित कर सकें।

१३.१ प्रस्तावना

भूटान हिमालय की ऊँची-नीची पहाड़ियों में छिपा देश है। चारों ओर भूमि से घिरा भूटान जिसका कि काफ़ी बड़ा भाग ऊँचे हिमालयी क्षेत्रा में है, उसकी जनता व शासकों के इस निर्णय के लिए

व्यापक रूप से जिम्मेदार था कि १९५० के दशकांत तक वे दुनिया से अलग-थलग ही रहे। उसने अस्तित्व के अपने ही मानदण्ड का क्रमिक विकास किया – विशिष्ट सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रथाएँ। भूटान के निवासियों ने अपने देश का नाम रखा है – द्रुक युल अर्थात् "विशालकाय ड्रैगन का देश'' और राजा को कहा जाता है द्रुक ग्योल्यो। राजा के पास राष्ट्र के मामलों में भाग लेने का अधिकार प्रमुखता से है। उसका लोकतंत्रा अपने ही तरीके का और अद्‌भुत है: उनके पास विधायिका है परन्तु वह इतर-चुनाव की राजनीति अपनाता है जहाँ विधानमंडल के सदस्य सर्वसम्मति से चुने जाते हैं और राजा द्वारा मनोनीत होते हैं।

यह इकाई भूटान में समाज, अर्थव्यवस्था एवं शासन-प्रणाली के मूल अभिलक्षणों पर सूक्ष्म दृष्टि डालती है। साथ ही, भूटान के राजनीतिक इतिहास को उकेरती है और उसकी अर्थव्यवस्था व समाज में हो रहे कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों के आलोक में भूटान में चल रही राजनीतिक प्रक्रियाओं का वर्णन करती है। यह भूटान में आर्थिक विकास प्रक्रिया का भी विश्लेषण करती है, खासकर सामाजिक क्षेत्रा में प्रगति के संबंध में।

१३.२ भौगोलिक विवरण

भूटान दक्षिण एशिया में एक छोटा-सा देश है जिसका क्षेत्राफल लगभग ४७,००० वर्ग कि.मी. है। भूटान कोई ४०० कि.मी. तक हिमालय की दक्षिणी ढाल के साथ-साथ फैला है। तिब्बत उसकी उत्तरी सीमाओं की रक्षा करता है और दक्षिणी सीमाओं की रक्षा करते हैं पश्चिम बंगाल एवं असम। उसकी पूर्वी सीमाओं पर तैनात है अरुणाचल प्रदेश तथा पश्चिमी सीमाओं पर सिक्किम के साथ-साथ तिब्बत की चुम्बी घाटी भी।

तिब्बत से लगी भूटान की परंपरागत सीमा वृहद हिमालय पर्वतमाला की अधिकतर चोटियों के साथ-साथ ही फैली है। यद्यपि यह सीमा प्रथा व रीति के अनुसार शुद्धीकृत है, लेकिन चीन जिसने १९५१ में तिब्बत पर अपना अधिकार जमा लिया था, इस सीमा को नहीं मानता। भारत के साथ लगी इस देश की सीमा दुआर के मैदानी इलाकों में हिमालय पर्वत-शृंखला के दक्षिण तक फैली है। यह सीमा १९वीं शती-मध्य में दुआर क्षेत्रा के एक प्रमुख भाग को ब्रिटिश राज्य में मिला लिए जाने के परिणामस्वरूप निकल कर आयी।

भौगोलिक रूप से, देश को स्थूलतः तीन किनारे के क्षेत्राों में बाँटा जा सकता है, प्रत्येक की अपनी विशिष्ट पारिस्थितिकी है। तिब्बत की सीमा से लगे हैं उत्तरी पर्वतीय प्रदेश अथवा वृहद हिमालय पर्वतमाला। २४,००० फीट की ऊँचाई तक पहुँचते शिखरों में छह प्रमुख दर्रे उत्तरी भूटान के बहुत थोड़ी-सी आबादी वाले क्षेत्राों की ओर जाते हैं। यहाँ एल्पाइन चरागाह पाये जाते हैं जो याकों को चराने तथा कुछ अनाजी फसलों व आलू की खेती के लिए प्रयोग किए जाते हैं। तिब्बत पर चीन का कब्जा होने से पूर्व भूटानी व्यापारी दर्रों से गुजरकर वहाँ कपड़ा, मसाले व अनाज ले जाते थे और नमक, ऊन व कभी-कभी याकों के रेवड़ लेकर लौटते थे।

वृहद हिमालय क्षेत्रा के नीचे है अन्तः हिमालय क्षेत्रा जहाँ भूटान की जान बसती है। समुद्रतल से कम ऊँचाई और नम मानसूनी हवाओं के प्रभाव के कारण इस क्षेत्रा में वनस्पति विभिन्न रूपों में पायी जाती है, यथा निचले ढालुओं में सघन वन से लेकर ऊँचे तलों पर एल्पाइन वनस्पति तक। देश की अधिकांश खेती-योग्य भूमि इस प्रदेश में है, जहाँ चावल तथा जौ, व मक्का उगाए जाते हैं। देश की अधिकांश जनसंख्या को संकेन्द्रित करने वाला यह भूभाग भूटान का आर्थिक एवं सांस्कृतिक हृदय-प्रदेश कहलाता है।

अन्तः हिमालय का दक्षिणी भाग और उसके नीचे की छोटी पहाड़ियाँ ही संकरे दुआर मैदानी भाग हैं जो भूटान की दक्षिणी सीमाओं के साथ-साथ एक २०-२५ कि.मी. चौड़ी पट्‌टी का निर्माण करते हैं। अत्यधिक वर्षा से ग्रस्त दुआर मैदानी भागों में गर्म और सीलन भरा उष्ण कटिबंधीय मौसम होता

है। अस्वस्थकर जलवायु और सघन उष्ण कटिबंधीय वातावरण के कारण इस भूभाग में जनसंख्या बहुत कम है, हालाँकि हाल के बीते दिनों से कुछ एक बाज़ार-केन्द्र एवं नगर नज़र आने लगे हैं।

भूटान में भरपूर खनिज भण्डार हैं, जिनमें ग्रेफ़ाइट, सीसा-जस्ता, जिप्सम, तथा चूना-पत्थर, डोलोमाइट, स्लेट व संगमरमर शामिल हैं। उसके मुख्य प्राकृतिक संसाधन हैं उसकी बारहमासी व तीव्र-प्रवाह नदियों वाली जल-विद्युत् शक्ति तथा प्रचुर उष्ण कटिबंधीय एवं एल्पाइन वन-सम्पदा। मुख्य भौगोलिक क्षेत्रों में प्रमुख नदियों – तोर्सो, रैदाक, संतोख व मानस – का जाल अपना जल वर्षा व बर्फ़ से पाता है। वन उनके दो-तिहाई से भी अधिक क्षेत्रा में फैले हैं। कृषि क्षेत्रा ने खासकर जंगल साफ किए जाने के फलस्वरूप ही हाल के वर्षों में विस्तार पाया है। तिस पर भी वह, कुल क्षेत्राफल के नौ प्रतिशत से अधिक नहीं है। लगभग सात प्रतिशत पर चरागाह तथा घास के मैदान व झाड़ियाँ हैं। शेष भू-भाग बर्फ से ढकी भूमि है या फिर बंजर पड़ी ज़मीन।

१३.३ समाज

ऐसी वैविध्यपूर्ण भौतिक परिस्थितियों में, जहाँ जलवायु उत्तर में कड़ाके की सर्दियों से लेकर दक्षिण में गर्म व लू भरे उष्ण कटिबंधों तक पायी जाती है, अनेक नृजातीय समूह बसे हुए हैं। सन् २००१ में भूटान की जनसंख्या २,७६,००० थी। भूटान के लोगों को मोटे तौर पर दो सांस्कृतिक समूहों में बाँटा जा सकता है : द्रुकपा और ह्लोत्शाम्पा। द्रुकपाओं में अनेक समूह आते हैं, जैसे – पश्चिम में न्गालोपा; मध्य क्षेत्रा में मोन्गोलिपा, खेन्पा, बुम्थांगपा व कुर्तोएपा; तथा पूर्व में शार्कोपा। हालाँकि ये समूह अलग-अलग भाषाएँ व बोलियाँ बोलते हैं, सभी महायान बौद्ध धर्म की द्रुपका शाखा के अनुयायी हैं। न्गालोप तथा शार्कोप संख्या में अधिक हैं। न्गालोप, देश की जनसंख्या का लगभग २८ प्रतिशत हैं और मुख्य रूप से भूटान के पश्चिमी भाग में बसे हुए हैं। वे द्ज़ोन्गखा, एक तिब्बती बोली बोलते हैं जिसने गत कुछ शताब्दियों से अपने अलग ही विशिष्ट भूटानी लक्षण विकसित कर लिए हैं। शार्कोपा जनसंख्या के लगभग ४४ प्रतिशत का निर्माण करते हैं और देश के पूर्व भाग में रहते हैं। वे भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्यों के निवासियों के सदृश होते हैं। वे ग़ैर-तिब्बती मूल की विभिन्न बोलियाँ बोलते हैं और उनके अपने अलग ही वेषभूषा, खानपान एवं त्यौहार हैं। मोन्गोलिपा, खेन्पा, बुम्थैगंपा तथा कुर्तोएपा संख्या में कम हैं, प्रत्येक जनसंख्या का २ से ४ प्रतिशत ही। वे सभी वहीं के जन्मे देशी लोग हैं और द्रुपका संस्कृति से संबंध रखते हैं जो कि भूटान की मुख्य संस्कृति है।

ह्लोत्शाम्पा नेपाली मूल के दक्षिणी भूटानी हैं। देश की जनसंख्या के लगभग एक-तिहाई का निर्माण करने वाले ह्लोत्शाम्पा आमतौर पर हिन्दू धर्म अपनाते हैं। वे भूटान में मुख्य नृजातीय समूह हैं क्योंकि वे एक विशिष्ट भाषायी एवं सांस्कृतिक समूह का हिस्सा हैं। उनमें से अधिकांश १९वीं सदी में भूटान आकर बसे। वे संभवत: उत्तरी बिहार व बंगाल के कोचे, उत्तरी बंगाल के राजबंसी तथा असम के शानाहोम लोगों के साथ घुल-मिल गए। यहाँ तक कि १९६० के दशकारंभ में सड़क-निर्माण कार्य शुरू हुए तो बड़ी संख्या में भारतीय तथा नेपाली गोरखे भी मज़दूरों के रूप में भूटान आये। हालाँकि इन लोगों को काम के परमिट जारी किए जाते थे, उन्हें सम्पूर्ण नागरिक का दर्जा नहीं दिया जाता था। १९५९ में भूटान के प्रवसन पर प्रतिबंध लगाते हुए एक कानून पारित कर दिया।

१३.३.१ भाषा

देश में चार मुख्य भाषाएँ प्रचलन में हैं : द्ज़ोंग्खा, भुम्थांगखा, शार्चाग्खा और नेपाली, तथा लगभग १४ कम महत्त्व की बोलियाँ। तथापि, द्ज़ोंग्खा ही भूटान की आधिकारिक राष्ट्रीय भाषा है। यह प्राचीन तिब्बती लिपि से गहरे जुड़ी है। यद्यपि द्ज़ोंग्खा देश के पश्चिमी भूभागों में व्यापक रूप से बोली जाती है, सरकार ने देशभर में सभी स्कूलों में उसका अध्ययन आवश्यक बनाकर इस भाषा के प्रसार और प्रतिष्ठा को बढ़ाने का प्रयास किया है। इस एक भाषा के अंगीकरण के पीछे उद्देश्य स्पष्टत: मिलकर रहने की ऐसी भावना उत्पन्न करना है जो कि विभिन्न घाटियों में रह रहे विभिन्न भाषाई समूहों को एक राष्ट्रीय समुदाय के अधीन लेकर आये।

१३.३.२ धर्म

भूटान के लोगों के सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक जीवन में धर्म एक अनोखी भूमिका निभाता है। भूटान का मूल धर्म 'बॉन' बताया जाता है। महायान बौद्ध धर्म का द्रुपका संप्रदाय (रैड हैट), जो कि भूटान का राज्य-धर्म है, माना जाता है कि ८वीं सदी में एक भारतीय बौद्ध भिक्षु गुरु पद्मसंभवे द्वारा भूटान में शुरू किया गया। वैसे, भूटान को एक विशिष्ट राजनीतिक पहचान देने वाले और धर्मतंत्रा की स्थापना करने वाले लामा नवांग नांग्याल हैं। बौद्ध धर्म भूटानी राज्य और समाज का अभिन्न अंग बन चुका है। यह पुरोहित वर्ग, यथा लामा, भूटानी समाज में एक बहुत शक्तिसम्पन्न समुदाय है। कुछ अनुमानों के अनुसार देश में लगभग ८५०० लामा हैं। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के साथ ही लामावाद की संस्था और भूटानी समाज में लामाओं की विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति पर संदेह प्रकट किया जाने लगा है।

मठाविषयक संगठन के प्रमुख हैं – ज़ खेम्पो, अर्थात मुख्य पुरोहित। यद्यपि राजा अब राज्य के साथ-साथ धार्मिक संगठन का भी प्रमुख होता है, सभी धार्मिक विषयों पर अधिकार ज़ खेम्पो के पास ही हैं, और राजा के सिवाय वही एक मात्रा व्यक्ति है, जिसे सर्वोच्च अधिकार का प्रतीक, भगवा दुपट्टा पहनने की अनुमति है। भूटान का केन्द्रीय मठ ताशीद्ज़ोंग भूटान की राजधानी थिम्पू में स्थित है और देश के प्राचीनतम मठों में से एक है। यही भूटान सरकार का मुख्यालय है ।

बोध प्रश्न १

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए इकाई के अंत में आदर्श उत्तर देखें।

निम्नलिखित को ध्यानपूर्वक पढ़ें और रिक्त स्थान भरें :

१) ..... ने १७वीं शताब्दी में भूटान में एक धर्मतांत्रिाक राज्य की स्थापना की।

२) भूटानियों की आधिकारिक भाषा ..... है।

३) ह्लोत्शाम्पा ..... हैं।

४) वह क्षेत्रा जो भूटान का आर्थिक एवं सांस्कृतिक हृदय-प्रदेश है, वो है .....।

५) भूटान सरकार का मुख्यालय है – थिम्पू में भूटान केन्द्रीय मठ .....।

१३.४ राजनीतिक इतिहास

एक स्वतंत्रा भौगोलिक सत्ता के रूप में भूटान प्रथम सहत्राब्दि के बड़े भाग तक अस्तित्व में ही नहीं था। ७वीं सदी के विख्यात् चीनी यात्राी ह्यून सांग के वर्णनानुसार, भूटान राजनीतिक ढाँचे से बाहर कोई अलग दर्जा नहीं रखता था। यह कामरूप राज्य (असम) के नियंत्राण में ही था। ६५० ईस्वी में कामरूप के राजा भास्कर वर्मा की मृत्यु उपरांत, उत्तर-पूर्वी भारत में अस्थिरता और उपद्रव का एक काल आया और कामरूप ने भूटान पर से नियंत्राण खो दिया। उसके बाद भूटानवासी कमोबेश पार्थक्य में – किसी भी बाहरी प्रभुत्व से मुक्त – रहे।

आठवीं शती के आरंभ में जब तिब्बत अपने सैन्य बल के शिखर पर था, तिब्बती सेनाओं ने भूटान पर आक्रमण कर दिया। भूटानियों की ओर से थोड़ा ही प्रतिरोध हुआ। कुछ बाशिंदे असम के मैदानी भागों में चले गए। बाकी ने तिब्बती शासन स्वीकार कर लिया। तिब्बती सेनाओं के पीछे-पीछे तिब्बती लामा, किसान व चरवाहे भी आ गए। भूटान पर तिब्बती लोगों का प्रत्यक्ष राजनीतिक आधिपत्य अल्पकालिक रहा जो नौवीं शती में तिब्बत के पतन के साथ ही समाप्त हो गया। तथापि,

तिब्बती सांस्कृतिक प्रभाव जारी रहा क्योंकि अधिकांश तिब्बती लोग टिके ही रहे। इस दौर में एक उल्लेखनीय घटना घटी – केन्द्रीय भूटान में एक स्थानीय राजा के निमंत्राण पर गुरु रिम्पोशे (अनमोल गुरु) के रूप में तिब्बत में प्रसिद्ध, पद्मसंभव का आगमन। गुरु पद्मसंभव ही भूटान में बौद्ध धर्म के पदार्पण के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं।

तिब्बती सेनाओं की वापसी के उपरांत भूटान में केन्द्रीय सत्ता ध्वस्त हो गयी और देश एक बार फिर से विखण्डित उपक्षेत्राों की दशा में आ गया। यह स्थिति १७वीं सदी तक जारी रही, फिर देश को एक असाधारण नेता द्वारा एकीकृत किया गया जो तिब्बत से आया था और जिसने भूटान को अपनी गृहभूमि मान लिया था।

सन् १६१६ में शाब्दुंग नवांग नांग्याल, द्रुक्पा पंथ का एक लामा, भूटान में शरण लेने आया। उसने अपनी धार्मिक विचारधारा के लिए एक गृहभूमि बनाने का निश्चय किया हुआ था और देश को एक स्थाई आधार पर संगठित करने का निश्चय भी। नवांग नांग्याल ने तिब्बत से होने वाले आक्रमणों को निष्फल कर दिया, भूटान के भीतर अनेक युद्धरत गुटों को नियंत्रित किया और पूरे देश पर एक सशक्त केन्द्रीकृत शासन लागू किया। अपनी सैन्य सत्ता स्थापित करने के बाद नवांग नांग्याल ने स्वयं को भूटान का धार्मिक (धर्म राजा) और राजनीतिक-प्रमुख भी घोषित कर दिया। भूटान इस प्रकार एक धर्मतांत्रिाक राज्य बन गया। देव राज, ऐहलौकिक सत्ता लामाओं की परिषद् द्वारा चुनी गई थीं। राज्य प्रशासन पर पूरी तरह से धार्मिक नेतागण यानी लामाओं का प्रभुत्व था, तथापि १८वीं शती-मध्य से लामाओं का नियंत्राण घटता गया और धीरे-धीरे सामंती सरदार राज्य-व्यवस्था अपने हाथ में लेने लगे। शाब्दुंग बग़ावत की बाढ़ को रोकने और विद्रोह का सामना करने में पूरी तरह निष्प्रभावी था। वहाँ केन्द्रीय सत्ता नाम की दरअसल कोई चीज़ नहीं रह गई थी क्योंकि क्षेत्राीय शासकगण (पैन्लॅप) अपने-अपने स्वायत्त अधिकारों का दावा करते थे। इस झगड़े में तौसांगी पैन्लॅप और पारो पैन्लॅप दो प्रमुख व्यक्ति थे। अंतिम और निर्णायक गृह-युद्ध १८८४ में हुआ, जब उग्येन वांगचुक, तौंगसा विजयी होकर उभरा और सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति और देश का वास्तविक राजा बन गया। १९०७ में मठीय समुदाय की एक प्रतिनिधि सभा, लोक सेवकों, व जनता ने निर्विरोध रूप से तय किया कि देश के एक पुश्तैनी शासक के रूप में देवराज के पद के लिए दावेदारों के बीच से सर्वाधिक प्रभावशाली प्रमुख, उग्येन वांग्चुक को पदासीन किया जाये। इसके साथ ही, भूटान के राजनीतिक जीवन में पुश्तैनी राजतंत्रा के स्थान पर शाब्दुंग की उच्च गुणसम्पन्न संस्था आ गई।

पुश्तैनी राजतंत्रा को प्रयोग में लाकर देश को स्थिर करने संबंधी विचार को ब्रिटिश भारत सरकार से पूरा समर्थन मिला। उन्नीसवीं शताब्दी भर भारत में अंग्रेज और भूटान के साथ किसी सहमति पर पहुँचने के लिए हुई बातचीत का नुकसान ही रहा क्योंकि भूटान में केन्द्र-सरकार कमज़ोर थी। भूटान की पहाड़ियों में अठारह दुआर अथवा प्रवेश-द्वारों से होकर भारत में मैदानी इलाकों पर भूटानियों के बारंबार धावों से अंग्रेज परेशान थे। इस परेशानी का अंत १८६५ में भूटानियों के साथ एक पूर्णस्तरीय युद्ध के बाद इन दुआरों को अंग्रेजों द्वारा जीतकर अपने में मिलाये जाने के बाद ही हुआ। १८६५ की संधि के द्वारा भूटान भारत में ब्रिटिश सरकार का एक संरक्षण प्राप्त राज्य बन चुका था हालांकि वह एक भारतीय राज्य कभी नहीं बना। जब उग्येन वांग्चुक पुश्तैनी राजा बन गया, तो ब्रिटिश सरकार ने १९१० में १८६५ की संधि को संशोधित कर दिया। इस संधि के द्वारा भूटानी सरकार अपने बाहरी ताल्लुकों के संबंध में ब्रिटिश सरकार की सलाह द्वारा मार्गदर्शन किए जाने को सहमत हो गयी, और अंग्रेजों ने बदले में, भूटान के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप से दूर रहने के कदम उठाए। भारत में ब्रिटिश सरकार ने स्वयं को इस बात के लिए भी प्रतिबद्ध किया कि वह भूटान की चीनी विस्तारवादी नीतियों से रक्षा करेगी। भारत में ब्रिटिश राज की समाप्ति के साथ ही भूटान पर ब्रिटिश संरक्षा समाप्त हो गयी। यद्यपि १९४९ की भारत-भूटान संधि १९१० की आंग्ल-भूटानी संधि की तर्ज पर ही की गई थी, उसमें भूटान की संरक्षा का कोई दावा नहीं किया गया था।

१३.५ राजनीतिक प्रक्रियाएँ

१३.५.१ शासन-तंत्र

तीसरे राजा, ज़िग्मे दोर्जी वांग्चुक ने (१९५२-७२) जिसे आधुनिक भूटान का निर्माता माना जाता है, देश की सामाजिक-आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था में अनेक सुधारों की शुरुआत की। वर्तमान राजनीतिक प्राधारों की स्थापना उसी के शासन-काल में हुई।

शासक अथवा द्रुक ग्याल्पो राज्य व सरकार के साथ-साथ चर्च का मुखिया भी होता है। उसके अलावा, शासन को सलाह देने के लिए राज्य परिषद् होती है। आठ सदस्यों वाली शाही परामर्शदात्री परिषद् (लोदी सोक्दे) भूटान सरकार के मुख्य कार्यकारी अंग के रूप में उभरी है। एक अध्यक्ष के नेतृत्व में इसके पाँच सदस्य जनता के प्रतिनिधि, दो मठों के प्रतिनिधि, तथा एक भूटान सरकार का प्रतिनिधि होता है। परिषद् अभिलक्षणत: सलाहकारी होती है और उसकी मुख्य भूमिका दैनिक प्रशासन में शासन की मदद करना है। चूँकि इसके सभी सदस्य राष्ट्रीय सभा के भी सदस्य होते हैं, विधायिका के साथ उसका विचार-विरोध शायद ही कभी होता हो।

परामर्शदात्री परिषद् के अलावा होती है मंत्रिपरिषद्। ये मंत्रिागण शासन द्वारा नियुक्त किए जाते हैं, परंतु राष्ट्रीय सभा की स्वीकृति के बाद ही। प्रथम मंत्रिपरिषद् १९६८ में गठित हुई थी। मंत्रिागण शासन के प्रति जवाबदेह होते हैं और उसी से आदेश प्राप्त करते हैं। चूँकि शासक सरकार का भी प्रमुख होता है, प्रधानमंत्री की भाँति यहाँ कोई पद नहीं होता।

१९०७ में एक निरंकुश राजतंत्रा के रूप में स्थापित भूटान १९५३ में राष्ट्रीय सभा अथवा सौङ्द्यू की स्थापना के साथ ही एक संवैधानिक राजतंत्रा की दिशा में चल पड़ा। यही है भूटान का कानून-निर्मात्री निकाय और सभी नागरिक, आपराधिक व व्यक्तिगत कानून इसी से उत्पन्न होते हैं। राष्ट्रीय सभा की सभी कार्यवाहियों पर निषेषाधिकार द्रुक ग्याल्पो के पास ही रहा जब तक कि १९६९ में राष्ट्रीय सभा अपने १९६८ की विधान आज्ञा के अनुसार, राज्य की संप्रभु संस्था नहीं बन गई। सभा द्वारा पारित कोई भी विधेयक सिर्फ़ शासन द्वारा एक बार लौटाया जा सकता है, परन्तु यदि वह एक साधारण बहुमत से दोबारा पास हो जाता है तो यह स्वत: अधिनियम बन जाता है।

राष्ट्रीय सभा की सदस्य संख्या १४० से २०० के बीच रहती है क्योंकि हर पाँच साल में अपना आकार घटाने-बढ़ाने के लिए सभा को छूट प्राप्त है। सभा में सदस्यों की तीन श्रेणियाँ होती हैं : हर तीन साल बाद प्रत्यक्ष मत द्वारा निर्वाचित और राष्ट्रीय-सभा सदस्यता के आधे और दो-तिहाई के बीच जन-प्रतिनिधि; मठ प्रतिनिधि, तथा द्रुक ग्याल्पो द्वारा मनोनीत सरकारी अधिकारीगण तीन वर्षीय अवधि के लिए चुने जाते हैं और सदस्यता के एक-तिहाई का निर्माण करते है।

प्रशासनिक व्यवस्था जो कि शाबद्रुंग नवांग नांग्याल के काल से विरासत में मिली है, देश को २० ज़ौङ्खागों (ज़ौंग जिलों अथवा राज्यों) में बाँटती है। प्रत्येक जिले में एक द्रुक ग्याल्पो द्वारा नियुक्त एक जिला अधिकारी होता है। जबसे पैनलॅप व्यवस्था समाप्त कर दी गई, ये अधिकारी सीधे केन्द्रीय शासन के अधीन आ गए। बड़े जिलों को खंडों में बाँट दिया गया है, प्रत्येक में ५०० परिवार होते हैं। हर एक खंड का मुखिया ग्रामवासियों द्वारा चुना जाता है; वही उनके व ज़िला प्रशासन के बीच मुख्य सेतु होता है।

भूटान में कोई राजनीतिक दल नहीं है। परन्तु राजनीतिक संगठन पूरी तरह से गायब भी नहीं है। १९५२ में दक्षिणी भूटान से कुछ नेपालियों ने जो पश्चिम बंगाल व असम में बस चुके थे, भूटान राज्य कांग्रेस (बी.एस.सी.) बनायी। बी.एस.सी. ने १९५४ में एक सत्याग्रह (अहिंसात्मक प्रतिरोध) आन्दोलन के साथ भूटान में अपना क्रिया-व्यापार बढ़ाने का प्रयास किया। परंतु यह आन्दोलन भूटान में नेपालियों के बीच उत्साह की कमी से और भूटान की नागरिक सेना की लामबंदी की वजह से विफल रहा। बी.एस.सी. आन्दोलन और भी कमज़ोर पड़ गया जब सरकार ने अल्पसंख्यकों को रियायतें दीं और राष्ट्रीय सभा में नेपालियों के प्रतिनिधित्व को मंजूरी दी। बी.एस.सी. का पतन हुआ और अंतत: १९६० के दशकारंभ में वह गायब ही हो गई।

देश की न्यायिक प्रणाली, असैनिक और फ़ौजदारी दोनों, शाबद्रुंग नवांग नांग्याल द्वारा डाली गई नींव पर आधारित है। सर्वोच्च-स्तर न्यायालय है – पुनरावेदन उच्चतम न्यायालय(supreme Court of Appeal) – द्रुक ग्याल्पो ने स्वयं सभी नागरिकों को औपचारिक याचिकाएँ दायर करने का अधिकार प्रदान किया है। पुरावेदन उच्चतम न्यायालय उच्च न्यायालय (थ्रिमखांग गौङमा) द्वारा किए गए फैसलों से संबंधित अपीलों को सुनता है। उच्च न्यायालय में जिसकी स्थापना १९६८ में निचली अदालतों की अपीलों पर पुनर्विचार के लिए की गई थी, छह न्यायाधीश होते हैं – पंचवर्षीय अवधियों के लिए राष्ट्रीय सभा द्वारा निर्वाचित दो और द्रुक ग्याल्पो द्वारा नियुक्त चार। उच्च न्यायालय के नीचे ज़िला अदालतें एक ज़िला न्यायाधीश के नेतृत्व में होती हैं, जिसको सामान्यत: नागरिक सेवा के पदों से लिया जाता है। छोटे-मोटे नागरिक विवादों में एक ग्राम प्रमुख द्वारा फैसला सुनाया जाता है।

१३.५.२ राष्ट्र-निर्माण

युद्धोपरांत काल में भूटान के पड़ोस में हो रहे क्रांतिकारी परिर्वतनों ने जिनमें – भारत एक लोकतांत्रिाक गणतंत्रा के रूप में उभर रहा था, चीन एक समाजवादी राज्य के रूप में उभर रहा था और नेपाल में राणा प्रणाली का पतन हो रहा था – इसने भूटान पर अपना प्रभाव छोड़ा। राजा को इतना बोध अवश्य हो गया था कि वह स्थिति को समझे और कई ऐसे सुधारों को भी लागू करे जिनकी लोगों ने माँग न भी की हो। उदाहरण के लिए, ज़िग्मे दोर्ज़ी वाग्चिक ने भूखण्डों पर ३० एकड़ की सीमा निर्धारित कर दी, भू-राजस्व को और अधिक न्याय-संगत बनाया, और छोटे भूखण्ड रखने वाले ग़रीब किसानों के मामले में भू-राजस्व समाप्त कर दिया। उसने देश में दास प्रथा और कृषि-दास प्रथा को ग़ैर-कानूनी करार दिया और तदोपरांत फाँसी की सजा को भी समाप्त कर दिया। उसने राष्ट्रीय सभा (National Assembly), यथा सरकार का विधायी अंग, की भी स्थापना की और अंततोगत्वा उसे एक संप्रभु संस्था में तब्दील कर दिया। परिणामत: भूटान अन्य पड़ोसी राज्यों से भिन्न, लम्बे समय तक शांत और स्थिर रहा।

भूटान के बाहरी दुनिया से मुखातिब होने और औद्योगिक संस्कृति से प्रभावित होने के साथ ही, वहाँ के लोगों की जीवन-शैली में परिवर्तन आना शुरू हो गया। सामन्ती समाज की पुरातन मूल्य व्यवस्था तेजी से बदल रही है। पारंपरिक अभिजात वर्ग, लामा जन और सामंती वर्ग उभरते मध्य वर्ग के सामने धीरे-धीरे आधार खोते जा रहे हैं। प्रशासनिक व तकनीकी पदों पर आदमी सरबराह करता यह वर्ग एक धर्मनिरपेक्ष परंपरा में अपेक्षाकृत अधिक शिक्षित है। परिणामत:, अभिजात वर्ग अपनी परंपरागत पहचान और रुतबे को कायम रखने के प्रति अधिक सचेत हो गए हैं।

तथापि, शासक अभिजात वर्ग को एक और दिशा से अपनी परंपरागत पहचान और प्रतिष्ठा को खतरा महसूस हो रहा है – दक्षिणी भू-भाग में नेपालियों द्वारा पृथक् पहचान का दावा किए जाने से। साठ के दशक में अपने आर्थिक विकास कार्यक्रमों को शुरू किए जाने के समय से ही देश में बड़ी संख्या में अकुशल व अर्ध-कुशल नेपालियों के अंतर्प्रवाह के साथ ही शासक अभिजात वर्ग को डर है कि नृजातीय नेपाली एक दिन संख्या में उनसे अधिक हो जायेंगे और राजनीतिक सत्ता हथिया लेंगे। यह भय उनके दिमाग में पक्का हो गया जब सिक्किम में नेपाली आप्रवासी जन जो जनसंख्या का ७५ प्रतिशत थे, १९७३ में सिक्किम के शासक के खिलाफ़ उठ खड़े हुए और उसे निरंकुश सत्ता से अलग कर दिया।

देश की प्रादेशिक अखण्डता और सांस्कृतिक पहचान को कायम रखने के लिए शासक अभिजात वर्ग ने एक द्वि-फलक रणनीति अपनायी है। सबसे पहले उसने नागरिक कानूनों को कड़ा किया। १९७७ में और फिर १९८५ में नागरिकता कानूनों का अधिनियमन किया गया, जिसमें ऐसे लोगों को जो १९५८ से भूटान में रह रहे हैं और जिनका नाम जनगणना सूची में दर्ज नहीं है, नागरिकता प्राप्त करने से रोक दिया गया। दूसरे, उसने द्रुपका पहचान को मज़बूत करने के कदम उठाए। १९८९ में राजा ने द्रिग्लाम नामझा (राष्ट्रीय आचार व शिष्टाचार) नामक 'एक राष्ट्र, एक जन' नीति में भूटान की सांस्कृतिक पहचान को बचाए रखने पर अभिलक्षित आदेशों को जारी किया। इन आज्ञप्तियों ने

भूटानी जीवन-शैली को, पोशाक समेत अपनाना सभी नागरिकों के लिए अनिवार्य बना दिया। महिलाओं काा अपने बाल परंपरागत भूटानी शैली में छोटे कटे रखना अपेक्षित है। सभी व्यक्तियों का आचार-व्यवहार बौद्धधर्म के उपदेशों पर आधारित होना आवश्यक था, जिसे व्यवहार में लाने के लिए धर्म कानूनी रूप से मान्य था। सरकार ने जौङखा, मुख्य राष्ट्रीय भाषा के स्तरीयकरण एवं जनप्रचार पर भी बल दिया।

१५,००० नेपालियों को अवैध आप्रवासी घोषित किए जाने और द्रिग्लाम नामझा को सख्ती से लागू किए जाने से नृजातीय नेपालियों के बीच असंतोष फैल गया। १९९० में नेपाल में लोकतंत्रा की विजय से प्रेरित होकर भूटान में नेपालियों ने नव-स्थापित राजनीतिक दल, भूटान पीपल्स पार्टी (बी.पी.पी.) के झण्डे तले एक राजनीतिक आन्दोलन शुरू किया। बी.पी.पी. ने राजा को माँगों का एक घोषणा-पत्रा पेश किया, जिसमें अन्य माँगों के अलावा थीं – राजनीतिक बंदियों की बिना शर्त रिहाई, निरंकुश राजतंत्रा से संवैधानिक राजतंत्रा में परिवर्तन, मंत्रिामण्डल में विभिन्न नृजातीय समूहों का आनुपातिक प्रतिनिधित्व, और नागरिक अधिनियम, १९८५ के संशोधन संबंधी मांगें। जब सरकार ने उसकी मांगों को मानने से इनकार कर दिया तो बी.पी.पी. ने हिंसक प्रदर्शन आयोजित किए। सरकार द्वारा इस विद्रोह के दमन का परिणाम हुआ नेपाल को भूटान से बड़ी संख्या में नृजातीय नेपालियों का निष्क्रमण, जहाँ वो अनेक शरणार्थी शिविरों में रहे इसी के साथ नेपाल सरकार भूटान में नृजातीय संघर्ष को समाप्त करने हेतु प्रयासों में एक मुख्य अभिकर्त्ता के रूप में उभरा है।

१३.५.३ विदेश-संबंध

भूटान के पर्वतीय लक्षण, किन्हीं भी अंतः सामाजिक माँगों का अभाव और सर्वोपरि, पहचान खोने के भय ने भूटान को प्रेरित किया कि वह एक गरिमापूर्ण पार्थक्य का जीवन व्यतीत करे। इस पार्थक्य ने शासक अभिजात वर्ग को बाहरी दुनिया की घटनाओं के प्रभाव से बचाए रखा। अपनी सीमित क्षमता से भिज्ञ और अपने स्वतंत्रा अस्तित्व को बचाए रखने के इच्छुक भूटान ने द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद भी बाहरी दुनिया के लिए अपने दरवाज़े बंद रखे।

तथापि, एशिया में चल रही परिवर्तन की भनक, खासकर भारत से अंग्रेजों की वापसी और चीन में एक सफल समाजवादी क्रांति, के साथ ही यह 'ड्रैगन किंगडम' धीरे-धीरे और होशियारी से राज्यों के अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का सदस्य बन गया। १९४७ में नई दिल्ली में आयोजित एशियाई संबंध सम्मेलन में भूटान ने भाग लिया। तदोपरांत भूटान नरेश भूटान की प्रतिष्ठा व स्थिति के संबंध में भारत में नए शासकों से आश्वासन पाने के लिए भारत आए। बहरहाल, यह १९५८ में भारतीय प्रधानमंत्राी, जवाहरलाल नेहरू की भूटान-यात्राा ही थी जो सबसे निर्णायक घटना सिद्ध हुई जिसने अंततः पृथकता संबंधी सदियों पुरानी नीति को समाप्त किए जाने को प्रवृत्त किया। इस दिशा में भूटान ने जो पहला कदम उठाया वो था भारत द्वारा प्रस्तावित आर्थिक व तकनीकी सहायता को स्वीकार करना।

इस परिवर्तन के पीछे स्पष्ट रूप से एक मुख्य तर्क था पचास के दशक में तिब्बत में चीनी हस्तक्षेप तथा भूटान, सिक्किम व भारत के 'नेफा' क्षेत्रा पर स्पष्ट दावों पर भूटान के नितांत अस्तित्व को खतरा। भूटान ने स्वीकार कर लिया कि वृहत्तर विश्व-समुदाय द्वारा मान्यता दिया जाना भूटान में एक तिब्बत दोहराए जाने को चीनियों की ओर से एक निरुत्साहकारी कारक के रूप में काम करेगा और उसके पृथक् अस्तित्व को सुनिश्चित करेगा। वह भूटान की ओर भारत की मंशाओं के संबंध में सभी अनिश्चितताओं को भी समाप्त करेगा। १९७१ में भूटान को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अपने पूर्ण सदस्यता प्राप्त मेम्बर के रूप में स्वीकार कर लिए जाने पर यह सपना आखिरकार साकार हो गया। दो वर्ष बाद भूटान निर्गुट आन्दोलन में शामिल हो गया। सत्तर के दशक में भूटान ने आर्थिक व तकनीकी सहायता संबंधी विविधता लाने के प्रयास भी शुरू किए, खासकर संयुक्त राष्ट्र संघ की एजेंसियों एवं बहुआयामी वित्तीय संस्थाओं की मदद से भूटान अपने बाह्य संबंधों यथा एशियाई व यूरोपीय देशों के साथ में भी विविधता लाया, बंगलादेश व नेपाल के साथ भूटान के पूर्ण-सदस्यता प्राप्त राजदूतीय स्तर के राजनयिक संबंध हैं। एक स्वतंत्रा अभिकर्त्ता के रूप में भूटान की निश्चयात्मक भूमिका संयुक्त राष्ट्रसंघ, निर्गुट आन्दोलन व अन्य अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर स्पष्ट रही है।

सार्क (SAARC) की सदस्यता ने भी भूटान को सक्षम किया है कि वह अपनी स्वतंत्रा स्थिति को सामने रखे और क्षेत्राीय मामलों के प्रबंधन में एक सक्रिय भूमिका निभाये।

बोध प्रश्न २

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए इकाई के अंत में आदर्श उत्तर देखें।

१) गुरु रिम्पोशे कौन हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

२) भूटान में १९वीं और २०वीं शती के दौरान राजनीतिक स्थिति कैसी थी?

.....

.....

.....

.....

.....

३) भूटान की प्रमुख राजनीतिक व न्यायिक संस्थाएँ कौन-सी हैं?

.....

.....

.....

४) देश में नेपाली शरणार्थियों की बढ़ती संख्या से निबटने के लिए भूटान ने कौन-कौन सी रणनीतियाँ अपनायी हैं?

.....

.....

१३.६ अर्थव्यवस्था

भूटान चूँकि दुर्गम भूभाग वाला एक भू-वेष्टित देश है, उसकी अर्थव्यवस्था साठ के दशकारंभ में नियोजित आर्थिक विकास के आगमन तक आमतौर पर पृथकता की एक उग्र अवस्था और चरागाही आत्मनिर्भरता से पहचानी जाती थी। अमूमन सारी आबादी बस भरण पोषण लायक खेती में लगी थी। वांछित आधारभूत ढाँचागत सुविधाएँ पूरी तरह नदारद थीं। कुशल श्रमिकों का कोई कार्मिक समूह था ही नहीं। देश में मात्रा ५९ प्राथमिक विद्यालय थे और मिडिल अथवा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय थे ही नहीं। वहाँ मात्रा चार अस्पताल व ग्यारह औषधालय थे और केवल दो अस्पतालों

में ही सोपाधि डाक्टर उपलब्ध थे। अपने सामान्य नागरिक राजस्व तथा भारत में ब्रिटिश सरकार और फिर स्वतंत्रा भारत की सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली अपर्याप्त मदद के अलावा भूटान के पास कोई संसाधन नहीं थे। वहाँ कोई बैंक नहीं था, न ही किसी प्रकार की अन्य मौद्रिक संस्था। वहाँ कोई मोटर से चलने वाला वाहन नहीं होता था, न ही पक्की सड़कें होती थीं, बिजली भी नहीं थी। देश को बाहरी दुनिया से जोड़ने वाला कोई टेलीफोन नहीं था, न ही कोई डाक-व्यवस्था थी। आधुनिक विश्व से इस प्रकार का प्राकृतिक पार्थक्य भूटान की बंद अर्थव्यवस्था के लिए जिम्मेदार रहा। साठ के दशकोत्तर में प्रकाशित संयुक्त राष्ट्र संघ के आकलन में भूटान को निम्नतम प्रति व्यक्ति आय स्तर के साथ आर्थिक विकास की सीढ़ी के सबसे निचले पायदान पर रखा गया।

१३.६.१ नियोजित आर्थिक विकास प्रयास

भूटान के नियोजित आर्थिक विकास का विचार तब आया जब १९५८ में भारत के प्रधानमंत्राी जवाहरलाल नेहरू ने उस देश की यात्राा की। तब तक भूटानी नेतागण इस बात से वाकिफ़ हो चुके थे कि उनका देश अनिश्चित काल के लिए निरंतर अलग-थलग नहीं रह सकता क्योंकि उसके आस-पास के देश संचार-साधनों व समाज-सेवा संबंधी विकास के पथ पर आगे बढ़ते ही जा रहे थे। इसके अलावा, भूटान को संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य के रूप में स्थान पाने की अभिलाषा थी और उसे पूरा करने के लिए भूटान को अपनी जनता के कल्याण में दिलचस्पी रखने वाले एक प्रगतिवादी देश के रूप में अपनी छवि दुनिया के सामने रखनी थी।

ज़िग्मे दोर्ज़ी वांग्चुक ने इसी कारण तय किया कि पार्थक्य को समाप्त किया जाये और नियोजित विकास प्रयासों द्वारा परिवर्तन-प्रक्रिया का शुभारंभ किया जाये। भारत के योजना आयोग की मदद से १९६१-१९६६ के लिए पहली पंचवर्षीय विकास योजना की रूपरेखा तैयार की गई। दूसरी योजना के लिए भी वित्त पूरी तरह से भारत सरकार द्वारा जुटाया गया। इसके बाद की योजनाओं के लिए भी भारत द्वारा भरपूर वित्त प्रबंध किया गया। एक तरीके से गत चालीस वर्षों की अवधि में भूटानी अर्थव्यवस्था भारतीय मदद पर अत्यधिक निर्भर हो गई है।

१९७२ में, भूटान में एक योजना आयोग अस्तित्व में आया। भूटान नरेश इस योजना आयोग का पदेन अध्यक्ष होता है। गत चार दशकों में विभिन्न योजनाओं की प्राथमिकताएँ रही हैं : (१) एक वांछित आधारभूत ढाँचा तैयार करना; (२) कृषि व खाद्य में आत्मनिर्भरता; (३) शिक्षा; एवं (४) परिवहन। हाल के वर्षों में योजना का दबाव विविध रूपों में दिखाई दिया है – बागवानी का विकास, जल-विद्युत् उत्पादन, वन-संपदा का परिरक्षण एवं उचित उपयोग तथा मध्यम एवं लघु-उद्योगों को बढ़ावा। सभी भूटानी आर्थिक गतिविधियों में भारतीय सुविज्ञता एवं संसाधनों का प्रमुखता से बोलबाला है। उदाहरण के लिए, जल-विद्युत् निदेशालय भारतीय इंजीनियरों की मदद से स्थापित किया गया। इसी प्रकार, दूरसंचार व्यवस्था एवं राजमार्ग निर्माण भारतीय अभियंताओं द्वारा ही किए जाते हैं। भूटान सरकार ने १९६८ में अपना खुद का बैंक भी स्थापित कर लिया है – बैंक ऑफ भूटान। भारतीय मुद्रा व सिक्कों का प्रयोग भूटान में वैध है। मौद्रिक एवं बैंक संबंधी मामलों में भूटानी सरकार को सलाह देने के लिए बैंक ऑफ भूटान ने भारतीय स्टेट बैंक के साथ मिलकर सहयोग का लाभ प्राप्त किया है।

हाल ही में समाप्त हुई आठवीं पंचवर्षीय योजना (१९९८-२००२) के दौरान भूटान के वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) यानी राष्ट्रीय आय में ६.७ प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से वृद्धि हुई, जिसमें वनविद्या व पशुधन की मुख्य भूमिका रही। उद्योग क्षेत्रा में ७.१ प्रतिशत की वृद्धि हुई जिसमें निर्माण कार्य व विद्युत-उत्पादन का काम अच्छा रहा। नब्बे के दशक में जल-विद्युत विकास भूटान की तरक्की का मुख्य स्रोत बन गया। पैदा की गई बिजली भारत को निर्यात की जाती है जो भूटानी सरकार को राजस्व कमाकर देता है। भूटान की वार्षिक राष्ट्रीय आय में सेवा-क्षेत्रा का योगदान आठ प्रतिशत है। परिवहन एवं संचार व्यवस्था में शनैः-शनैः सुधार आ रहा है जो देश को विदेशी पर्यटकों को लुभाने में मदद कर रहा है।

भूटानी मुद्रा भारतीय रुपये से बंधी है और इस व्यवस्था के कारण ही भूटान की मौद्रिक नीति में लचीलेपन के लिए संभावना सीमित है। निजी क्षेत्रा का सीमित अस्तित्व घरेलू निवेश के उत्पादन को रोकता है। ऐसे बहुत की कम उद्यम हैं जिनको प्रमुख इकाइयाँ कहा जा सकता है। अर्थव्यवस्था का कुल मिलाकर छोटा आकार निजी उद्यमता पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। पर्याप्त घरेलू निवेश के अभाव में अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अर्थव्यवस्था को बाहरी कर्जों व देनदारों पर निर्भर रहना पड़ता है। भूटान के लिए भारत ही वित्तीय मदद का प्रमुख महाजन है। भूटान का ९० से ९५ प्रतिशत कारोबार भारत के साथ है।

१३.६.२ सामाजिक क्षेत्र

आर्थिक क्षेत्रा व सामाजिक क्षेत्रा में उपलब्धियों के बीच सीधा संबंध बना हुआ है। अस्सी के दशकारंभ से ही भूटान के सामाजिक क्षेत्रा में उल्लेखनीय सुधार आया है। मसलन, स्वास्थ्य संकेतकों के उदाहरण में, जीवन-प्रत्याशा १९६१ में ३६ वर्ष से बढ़कर २००१ में ६८ वर्ष हो गई। इसी प्रकार, १९८६ व २००१ के बीच शिशु मृत्युदर १४३ से घटकर ६२ प्रति १००० जीवित जन्म और मातृ मृत्युदर ७.८ से घटकर २.७ प्रति १००० जीवित जन्म हो गई। पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्युदर १६३ से घटकर ८५ प्रति १००० जीवित जन्म रह गई।

गत चार दशकों में भूटान ने साक्षरता स्तरों को ऊँचा उठाने में भी उल्लेखनीय प्रगति की है। १९६० में, देश भर में ५०० से भी कम बच्चों ने धर्मनिरपेक्ष प्राथमिक विद्यालयों में हाज़िरी दी और १९६४ तक तो देश में कोई माध्यमिक स्कूल ही नहीं था। अब २००१ में लगभग ७५ प्रतिशत बच्चे (कुल बच्चों की आबादी का) प्राथमिक विद्यालय में जाते हैं और उनमें से ४७ प्रतिशत बालिकाएँ हैं। कुल मिलाकर १९९८ में वयस्क साक्षरता दर ५५ प्रतिशत थी और महिलाओं के लिए यह दर ३० प्रतिशत थी।

रोज़गार के मोर्चे पर प्रदर्शन कुछ नातिशय है खासकर इसलिए कि निजी क्षेत्रा अभी पर्याप्त रूप से विकसित नहीं है और सार्वजनिक क्षेत्रा निश्चित सीमा से अधिक नौकरियाँ मुहैया नहीं करा सकता। वस्तुत: बेरोज़गार युवाओं को नौकरियाँ मुहैया कराना हाल के दिनों में एक प्रमुख चुनौती बन गया है। ज़रूरी बुनियादी ढाँचा, जैसे कि सड़कें, बिजली, दूरसंचार आदि का अभाव मध्यम एवं लघु उद्योग के विस्तार में बाधक है। भूटान में औद्योगिक विकास की पूँजी-साधित प्रकृति भी सार्वजनिक क्षेत्रा में रोजगार उत्पादन को सीमित कर रही हैं। सार्वजनिक क्षेत्रा में प्रमुख औद्योगिक गतिविधियाँ हैं – जल-विद्युत उत्पादन तथा सीमेंट, प्रबलित मिश्रधातुओं, कैल्शियम कार्बाइड, प्रसंस्करित खाद्य, कणिका पट्ट (particle board) आदि का उत्पादन, जो कुछ सीमित लोगों को ही नौकरियाँ उपलब्ध कराते हैं। यहाँ भी अनेक नौकरियाँ कम कुशलता की दरकार वाली हैं जो, भारतीय आप्रवासियों (भूटान में जा बसे) द्वारा हथियाई जा रही हैं। चूँकि बढ़ती हुई बेरोज़गारी भविष्य में सामाजिक अनिश्चितताओं को बढ़ा सकती है, सरकार ने बुनियादी ढाँचागत सुविधाओं को जुटाये जाने पर ध्यान देना शुरू कर दिया है और हाल के वर्षों में निजी क्षेत्रा को बढ़ावा देना भी शुरू किया है।

बोध प्रश्न ३

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए इकाई के अंत में आदर्श उत्तर देखें।

१) भूटान के आर्थिक विकास में भारत की क्या भूमिका है?

.....

.....

२) सामाजिक क्षेत्रा में भूटान की उपलब्धियों का विश्लेषण करें।

.....

.....

१३.७ सारांश

क्षेत्राफल और जनसंख्या के लिहाज से भूटान विश्व में सबसे छोटा देश है। राजतंत्रा इस देश में अब तक विद्यमान है। हालाँकि उसके पास राष्ट्रीय-संसद है, परन्तु राष्ट्रीय मामलों में राजा की अधिक चलती है। वह ग़ैर-चुनावी राजनीति को अपनाता है और संसद में प्रतिनिधि जन सर्वसम्मति से निर्वाचित व राजा द्वारा नामज़द किए जाते हैं। लोग धर्मनिरपेक्षता के मसले पर कम ही ध्यान देते हैं। लामा जन देश के सामाजिक व धार्मिक जीवन का मुख्य आधार बनाते हैं।

१९४७ में अंग्रेजों द्वारा भारत छोड़ दिए जाने के बाद, स्वतंत्रा भारत ने १९४९ में एक संधि की जिसके तहत भारत ने बाहरी खतरे की स्थिति में भूटान की संप्रभुता का आश्वासन दिया। इस संधि के तहत ही भारत भूटान के बाहरी संबंधों को नियंत्रित करता है। भारत भूटान के आर्थिक विकास में भी एक प्रमुख भूमिका निभाता रहा है। अपनी आर्थिक तरक्की के रास्ते में भूटान को कठोर भौतिक-जलवायविक परिवेश, गंभीर संसाधन अल्पता व प्राकृतिक सुगमता, मानव संसाधनों का अभाव व प्रशासनिक अक्षमता, आदि से जूझना पड़ता है। भूटान का व्यापार पूरी तरह से भारत पर निर्भर है। भूटानी अर्थव्यवस्था के छोटे आकार को घरेलू निवेश उत्पन्न करने में एक मुख्य अवरोध के रूप में देखा जाता है। विनिर्माण कार्य में निजी उद्यम का प्रायः वहाँ कोई नामोनिशान नहीं है, जोकि रोज़गार अवसर पैदा किए जाने को सीमाबंधन में डालता है। सत्तर के दशकोत्तर से विकास की गति में सार्थक तेजी आयी है और देश ने शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्राों में महत्त्वपूर्ण प्रगति की है।

१३.८ कुछ उपयोगी पुस्तकें

ऑल्शाक, ब्लाश, सी. १९७१, *भूटान : लैण्ड ऑफ़ हिडिन ट्रैज़र्स* (नई दिल्ली)

गुप्ता, शान्तिस्वरूप, १९७४, *बिट्रिश रिलेशन्स विद् भूटान* (जयपुर)

रुस्तमजी, नारी, १९७८, *भूटान : द ड्रैगन किंग्डम इन क्राइसिस* (न्यूयार्क)

राहुल, राम, १९८३, *रॉयल भूटान* (नई दिल्ली)

वाइट, क्लौड, जे., १९८४, *सिक्किम एण्ड भूटान* (नई दिल्ली)

वर्मा, रवि, १९८८, *इण्डिया'ज़ रोल इन दि इमर्जेन्स ऑफ़ कॉन्टैम्पॅरेरी भूटान* (दिल्ली)

१३.९ बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न १

१) नवांग नांग्याल

२) ज़ौङखा

३) भूटान के दक्षिणी भूभाग में रहने वाले नेपाली मूल के लोग

४) आंतरिक हिमालयी क्षेत्रा

५) ताशिद्ज़ोङ

बोध प्रश्न २

१) गुरु रिम्पोशे भारत से आये बौद्ध भिक्षु पद्संभव के लिए दिया गया तिब्बती नाम है। वह आठवीं सदी में भूटान आये और वहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार किया।

१६१६ में एक तिब्बती लामा नवांग नांग्याल भूटान पधारे और धर्मराज के नाम से अपना राज्य स्थापित किया। उन्होंने एक विधिबद्ध प्रशासन प्रणाली चलाकर अराजक भूटान में व्यवस्था कायम की। लामाओं को कुछ उत्तरदायित्व, अधिकतर धार्मिक, सौंपे गए। तथापि, १६५१ में नवांग नांग्याल के गुज़रते ही सामंती आकाओं ने राजनीतिक शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली और इससे राज्य प्रशासन में लामाओं की भूमिका घट गई।

२) प्रारंभत: १९वीं सदी में भूटान एक अराजकता की स्थिति में था, खासकर इसलिए कि विभिन्न धर्मों के नेता एक दूसरे से लड़ रहे थे। १८६५ के युद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार ने भारत के मैदानी इलाकों पर भूटानियों द्वारा किए जाने वाले हमलों पर काबू पा लिया। युद्धोपरांत आंग्ल-भूटान संधि पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद भूटान एक ब्रिटिश संरक्षित राज्य हो गया भूटान अपनी विदेश नीतियों में अंग्रेजों द्वारा निर्देशित किए जाने पर सहमत हो गया और बदले में अंग्रेज देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने को राजी हो गए। १९४९ की भारत-भूटान संधि इसी सुलह की तर्ज पर है; यद्यपि भारत ने भूटान पर कोई संरक्षित राज्य होने का दावा नहीं किया। वर्तमान भूटान राजतंत्रा के अंतर्गत ही बना हुआ है, जहाँ राज्य प्रशासन की प्रमुख शक्ति राजा के हाथ में है। १९५२ से भूटान के पास एक राष्ट्रीय सभा हो गई है जिसके सदस्य सर्वसम्मति से चुने जाते हैं।

३) मुख्य राजनीतिक व न्यायिक संस्थाएँ हैं : द्रुक ग्याल्पो, शाही सलाहकार परिषद्, मंत्रिामण्डल, राष्ट्रीय सभा (सौङद्यू) और उच्च न्यायालय (थिम्खांग गौङमा)।

४) उसने नागरिक कानून कड़े किए और द्रुक्पा पहचान को दृढ़ता प्रदान करने के लिए कानून लागू किए।

बोध प्रश्न ३

१) भूटान के पास विपुल वन एवं खनिज संसाधन हैं परंतु वित्तीय एवं कुशल मानव संसाधनों का अभाव है। गत चालीस वर्षों में भारत ने वित्तीय सहायता प्रदान की है, शुरुआत में पंचवर्षीय योजनाओं में पूरी तरह से पैसा लगाया। उसने अनेक क्षेत्राों में तकनीकी सुविज्ञ राय भी दी है और बुनियादी ढाँचे को बनाने व सेवा-उद्योगों में भूटान की मदद कर रहा है।

२) भूटान विश्व के अल्पतम विकसित देशों में एक है। १९६४ तक वहाँ एक भी माध्यमिक स्कूल नहीं था। तथापि, १९८० से वहाँ सामाजिक सूचकों में क्रमिक प्रगति हुई है, खासकर स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्रा में। शिक्षित युवाओं की बेरोज़गारी सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। वह मध्यम एवं लघु-उद्योग में निजी उद्यमशीलता को बढ़ावा देने का प्रयास कर रही है परन्तु घरेलू निवेशों की कमी उसकी प्रगति के मार्ग में बाधक है। भारत की मदद से भूटान इस मसले को निबटाने का प्रयास कर रहा है।